है, न मालूम उससे क्या २ कराता है अतः
आपका यहां से पधारना भी कुछ ठीक ही से
अच्छा ही हुआ। श्री हरदेव जी को रु. के लिये
पत्र आया है श्री पुरोहित जी परिस्थिति वश
सपरिवार बाहर चले गये हैं श्री चम्पालाल
जी की भाभी की मृत्यु होगई है तथा स्वयं रुग्ण हैं
उन की परिस्थिति अत्यन्त आर्तिमय ही है समझ में
नहीं आता है क्या करें ईश्वर की [illegible] की
उस बालक की छोटी ४ वर्षीय कन्या और समाप्त
हो चुकी है। उससे छोटा बालक भी बीमार है
अब कुछ सेहत मालुम होती है। रवि, सोम, आपके
चरणों में कम्पा से ठीक निकल गये हैं रातदिन
भारी २ आशंकाये बनी रहती है! अभी २ कुम्हेर
के लूटे जाने के समाचार मिले है। कृपया पत्र
अवश्य दीजिये वहां का जल अनुकूल आगया
होगा। श्री [illegible] बिहारी लाल जी से सादर जयशंकर

हृदय में बातें बहुत है लिखी नहीं जाती कृपा रखिये आपका।

गोविन्द

[illegible]

पधार रहे हैं। यदि उचित हो और इच्छा हो तो
यहां पधारें यहां से मैं और आप साथ ही
चलें १-२ दिन में यहां भी कोई बात नहीं है
२-३ पत्र में गीता भवन भी भेज चुका हूं
गत ता. १२ की रात्रि को श्री १-५ मात्र के यहां
चोरी हो जाने से तथा वर्तमान परिस्थिति के
कारण श्री मात्र की स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं है
आँखें बहुत जोरों से दुख रही हैं शेष मिलने पर
मेरे यहां आज कल अमुक प्रसाद जी हस्तरेखा के
योग्य विद्वान् आये हुए हैं वह मेरे लिये दालमिया-
के यहां की कागज की एजन्सी दिलवाने को तैयार हैं।
रु. की आवश्यकता है और सीमेन्ट की एजेन्सी के
लिये भी कहते हैं यह बात ११ वर्ष पूर्व भी जब यह
आये थे तब भी इन्होंने मुझ से कही थी जैसी आज्ञा हो
यह आपके दर्शनों के भी अत्युत्सुक हैं। इन की
इच्छा तो मुझे आज भेजने की ही थी किन्तु गत रात्रि मुझे
भी ज्वर रहा है अतः वैद्य जी की अनुमति नहीं है
अभी २ श्री धनेश जी द्वारा ज्ञात हुआ है कि श्री महेश
जी यहां आये हैं। श्री बल जि[illegible] जी का—

[illegible] पत्र — [illegible] । [illegible]

श्री:। भरतपुर मार्ग शु. ७ शनौ
सं० २००८

अनन्तश्री:

पूज्य पाद श्री बाबा महाराज के पुनीत पाद पद्मों में दास के कोटिश: प्रणाम स्वीकृत हों। गत परसों रात्रि को श्री हरदेव जी का पत्र मिला कल उत्तर इस कारण नहीं दिया कि मैं आज की गाड़ी से श्री भाबी जी को लेकर आरहा था किन्तु आज मौसम एक दम यहां का बदल गया वृष्टि के कारण शीत अत्याधिक होने से रुग्णा को किस तरह लाया जाय दूसरे गत कल श्री चन्द्रशेखर जी ने जो औषधि बदली है उससे आज ज्वर भी कम है अत: मैं आज यहां से न आसका और भाबी जी का विचार भी ३-४ दिन और रहने का होगया है। छौंहरी अब तक न पहुंचने का कारण यह है कि कन्नौज से व्यापारी ठेका लगाने वाले गत परसों ही आये हैं उन्हीं के कारण विलंब था श्री महेश जी के समीप कल तक को श्री धनेश जी स्वयं जाते हैं ३-४ दिन में आशा है छौंहरी का सब प्रबन्ध ठीक होजायगा यदि वहां चित्त नहीं लग रहा हो तो आप वृन्दावन पधारें और मुझे पत्र दें ताकि उसी दिन मैं वहां पहुंच कर उचित प्रबन्ध करदूं हमारे मौसी ता. २५ को बम्बई

भरतपुर

ता: ६८-१२-४०

श्री बाबा महाराज के चरण कमलो मे मेरी साष्टाङ्ग प्रणाम पहुंचे। आपकी कृपा से सब राजी खुशी हैं। यहाँ पर मेरे और सबो के स्वाज होगई है। आप कृपा कर देवदारू का तेल भिजवाई। मेरे और पित्रा के बहुत जोर से है।

गुरुदेव परसों आगये हैं। यहाँ पर खूब सर्दी पडने लग गई है।

यहाँ के समाचार बहुत बुरे हैं क्या किया जाय। आप आज्ञा देवे तो मैं आपके पास आजाऊ।

सब बच्चे व रानी साहब आपके चरणों मे साष्टाङ्ग प्रणाम करती हैं

आपका दासानुदास
आज्ञाकारी
गिरधारी

भरतपुर
ता: १३-११-४६

श्री बाबा महाराज के चरण कमलों में मेरा साष्टांग प्रणाम पहुंचे,

मैं अपने बारे में तो क्या लिखूं क्योंकि आप सब कुछ जानते हैं यह बात दूसरी है कि जो जानना न चाहें। मैं उम्मेद करता हूं कि आप सकुशल होंगे। मैं ने ६ चिट्ठी लिखी है और वे सब मेरे पास रखी हुई हैं क्यों कि शायद उनमें कोई अनुचित बात लिखी हो। मिलूंगा उस समय दूंगा।-

सारांश यह है कि "अब दुख के दिन बीतत नाहीं"। मैं यह बहुत सोचता हूं कि हम सब संसार के जीव हैं और परम शक्ती के खिलौने हैं हम इसमें कुछ नहीं कर सकते क्यों कि शुभ और अशुभ दोनो साथ २ चलते हैं। शुभ यह था कि मैं मौत के मुंह में से जब कि मौत ने अपना मुंह बन्द कर लिया मुझे दांतो के बीच में दबा करके मगर आप के संकल्प ने मुझे उसमें से निकाल कर और बाकी बची हुई उम्र आप के दुख उठाने के लिये आज संसार में ले आये। ठीक है आपने मेरी स्त्री और बच्चो के साथ वह उपकार किया कि जिसको वे लोग अपनी आत्मा को इस आयू में भी आप की क्या आप के दासानुदास की भी सेवा करने पर नहीं उरिण हो सकते। और मैं इस तुच्छ बुधी के अनुसार आप के लिये एक भार हो गया। क्यों कि आप मेरी परीस्थिती खूब जानते हैं। मैं अपने बारे में कुछ लिखना नहीं चाहता परन्तु लेखनी अपने आप यह लिखवाना चाहती है क्यों कि हृदय यह कहता है कि आप सब समझते हैं और बुधी का ध्यान कहता है कि कहीं ऐसा न हो कि ... मेरी इस परीस्थिती

को जान कर अति दुख न हो जाय इस लिये मेरी लेखनी चल रही है जिससे कि आप मेरा दुख उतना ही समझे जितना कि लिखा हो या थोड़ा बहुत ज्यादा।

मैं आप के पास आना चाहता हूँ चाहे मेरा कुछ हो। क्यों कि पांच महीने से खान पान नहीं मिला है और महाराजा साहब ने बिलकुल मना करदिया है। जैसी आज्ञा। पत्र आने पर रवाना होजाऊगा।-

आप का आज्ञाकारी
गिरधारी शरणसिंह

रानी साहिब व बिट्टो और पित्रा आपके चरण कमलों में प्रणाम करते हैं —

श्री | भरतपुर ता. २२-८-४८

श्रीमान्

अनन्तश्री पूज्यपाद बाबा महाराज के पुनीत पाद पद्मों में दास के कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हों, सर्वतः कुशल मस्तु। पत्र मिला प्रसन्नता हुई। यतः कई दिवसों से आपका पत्र न आने की कारण भी बड़ी चिन्ता हो रही थी और बार बार यही ख्याल होता था कि कहीं बाबा महाराज भी इस जाना वटो से अस्वस्थ हो चुप गये हैं क्या इत्यादि अनेकों विचार प्रति दिन होते रहते थे। सौ. श्री रानी ता. को मैंने समझा दिया है आप जैसा उचित समझें। श्री हरदेव जी का पत्र इसी पत्र के साथ आया है वह आगामी अमावश्ती तक आपके समीप आरहे हैं श्री बलाशिवनाथ जी के यहां अब आगानाथ यात्रा की छुट्टी ८ प्र. त. होंगी १५ दिन बाद पत्र लिखूंगा क्योंकि अब कोई पत्र उन्हें नहीं मिलेगा। श्री घनेश्या जी मनोहरजी बाबूजी ... जी चौ. दिनेशजी ने प्रणाम कहे हैं। श्री पं. मदन लाल जी ने पादों में प्रणाम कहा है

सो: श्री रानी साहिबा २ को कुमार आदि प्रणाम कहते हैं

श्री शीव प्रसाद जी को पत्र लिख रहा हूं

कृपया ठिकाने पत्र शीघ्र ही देते रहियेगा

शिव कुमार कहे

श्री माता मनोहरा चरण:

गोविन्द

निवेदन है कि अमरकंटक जाने की
इस समय नहीं उचित है यतः
एक मिलने वाले ने यहां कहा है कि
मैंने उनको आगरा में [illegible]
घाट पर टहलते [illegible] पास
[illegible] का पता है और आगरा
से अतिथि लिख उत्तर है
[illegible] जाने में [illegible]
[illegible]

पुनश्च —

एक समाचार मिला कि किसी बैंक वाले ने उन्हें ता. ३०-७-४७ को अर्थात् आने के दूसरे दिवस प्रात: काल आगरे के ईदगाह स्टेशन पर लोकल कोल के डिब्बे में बैठे हुए देखा है इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि कहीं श्री भाई अमरकंटक ही तो नहीं पधारे यदि वहां का कुछ पता होतो लिखिये आपका उचित आज्ञा दीजिये/

अर्शहर

निंबोलीकी गिरी	१ तो.
बकायन की गिरी	१ तो.
खुबानीकी गिरी	१ ,,
बड़ी हरड	२ ,,
छोटी हरड	२ ,,
आंवला	२ ,,
प्रवाल भस्म	१ ,,
मुक्ताशुक्ति भस्म	१ ,,
मेंहदीके फूल सूखे	३ तो

१ गो० प्रातः १ सायं जलके साथ या बकरी के दूध के साथ सेवन करें।

इन सबोंको खरलमें डालकर सात दिन तक अंगलीजोभीके पत्तों के स्वरसमें घोटें फिर सात दिन तक मेंहदी के पत्तों के स्वरसमें घोटें फिर चनेके बराबर गोलियाँ बांधकर सुखा लिजावें।

श्री:।

श्रीमान्

पं॰ हरदेवजी सादर जय शङ्कर। सर्वतः कुशल मस्तु आपका ता॰ ५-३-४९ का लिखा पत्र यथा समय मिला उत्तर में विलम्ब का कारण यह है कि यहां एक यज्ञ हो रहा है श्री पं॰ श्याम शरणजी शास्त्री के आग्रह से मुझे [illegible] क्षमा करना। पंचांग के बनाने के बारे में निवेदन है कि मैं तो श्री बदरी प्रसाद जी के केवल आपके पूर्व पत्रानुसार केवल तिथ्यादि ही जैसा कि आपने लिखा था भिजवा सकता हूं क्योंकि एक मनुष्य इतनी जल्दी अर्थात् आगरा तक देने के यह करके भेज [illegible] शक्ति नहीं है श्री कृष्ण चन्द्र जी की बात तो आप जानते ही हैं कि उनका पंचांग तो बनता ही है केवल देशान्तर संस्कार किया और सब शुद्ध और न मालूम क्या योग है दैनिक ग्रहों का [illegible]

K. T. O

।:श्रि

यह लोग क्या करते हैं शायद अलमानिया जैसी ही कोई
पुस्तक १०-२० वर्ष की इकट्ठी ग्रहों आती होगी
नहीं एक मनुष्य का यह कार्य नहीं है। दूसरे
श्री बदरी प्रसादजी आपकी वि० २ [illegible] प्रकाश का करना
चाहते हैं। आपके भेजे हुए जन्म पत्रादि नूतन गणित
से गणित से मैंने यो पुरातन से लिख लिये
यहां पुराने पंचांग तो नूतन गणित के हैं नहीं
अतः लिया (जाय) इस तो नया लिया जाना [illegible]
किस ग्रहों में क्या संस्कार किया जाय लिखिये
पुरोहितजी से अभी मिलना नहीं हुआ है
(जल्दी) मिलने पत्र दूंगी। श्री [illegible]
शिव प्रसादजी के पत्र आये थे उनसे [illegible] की
सूचना नहीं मिली है अभी मैंने [illegible]
अनेक काश्य के [illegible] नहीं [illegible]

o.T.K

श्री नन्द लाल जी चौमाल से मेरी श्री जय शंकर कहे
मौसम की चांदी की रिपोर्ट जैसी आप लिख रहे हैं
वैसी ही होती अप्रैल मास की आगरा की नेचर
(लौंग) सज्जनों की भारत प्रकाशित भेजवा हमें भी
आधे मूल्य में पत्रकी सेवा देंगे

... श्री पूज्य पाद बाबा महाराज के पुनीत पाद पद्मों में दासानु
दास के कोटिशः प्रणाम निवेदन करना।
श्री बाबू केशव देव जी को सप्रीति तथा यथा योग्य सभी से
जय शंकर पृथक २ कह देना। और यह भी कहना कि
पं॰ तोताराम जी को यहा जो कुन्डली भेजी है उसीको
उन्हें अवधि तक वापस भेजें यहां से निर्णय होकर
ही भेज सकूंगा। श्री भगवती जी को जय शंकर कहना।

श्री लक्ष्मण जी से श्री ... [illegible] ... से

बातें हुईं। श्री जगदीश ... समाज में नहीं जा सके

कि किस तरह कैसे हो ... पर यह निश्चय ... (हिन्दी)

जाय मेरी समझ से यह ... सम्मेलन में ही

निर्णय हो।

श्री पं॰ मथुराप्रसादजी वौ॰ को। डिप्टी डाइरेक्टर ने
मुअत्तिल करदिया है / श्री गिरिराजशरणजी के
पत्र में प्रणाम लिखने को लिखा है / श्री तिवारी
जी के बालक को मोतीझला होगयाथा वे
उसे लेकर हस्पताल दाखिल हैं अब
कुछ शान्ति है, आशा है वे शीघ्र ही अब
हस्पताल छोड़ देंगे / शेष कुशल है / मुझे धीरे२
स्वास्थ्य लाभ होरहा है, दक्षिण हाथ की
[illegible]मिष्टिका और दक्षिण पाद की मध्यमा
में ही रोग शेष है और इन्हीं में विशेषथा
शेष सभी प्रङ्ग ठीक हैं / श्री विश्वम्भर
सिंह जी सादर साष्टाङ्ग प्रणाम निवेदन
करते हैं / श्री मास्टर मनोहर लाल जी
गुप्त के प्रणाम स्वीकृत हों / श्री दुर्गादत्त जी
यहां आये हुए हैं वे प्रणाम कहते थे /
जन्मपत्र प्रायः पूर्ण सा ही होगया है श्री ज्यो. जीने
लिखदिया है २-४ कागजों के न मिलने से कुछ शेष
है कल बजार में कागज मिलने से १-२ दिन पूर्ण हो-
जायगा श्री कं॰ के॰ आनन्द के पते पर भेज दूं[illegible]
कल व्यास पूर्णिमा है अत: उसके उपलक्ष
श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं
वीरान् द्व्यष्ट चतुष्क षष्टि नवकं
श्री मन्मालिनि मंत्रराज सहितं वन्दे
आप सहित समस्त गुरु मण्डल को को[illegible]

ooo

विश्वं परं कातिचिदम्बरमम्ब कोचि
आनन्दमेव कातिचित्कातिचेच्च मा[illegible]
त्वां विश्व मातु रपो वयमामनाम
साक्षादपार करुणां गुरुमूर्तिरेव /

✿

श्री पं॰ बलजिन्नाथ जी को सादर
सप्रेम जयशङ्कर कहें /

बारंबार कोटिश: प्रणाम है
कुशल पत्र दें / गोविन्द।

श्री: | चौबुर्जा-भरतपुर
७-७-६०

अनन्त श्री सर्वतन्त्र स्वतन्त्र बाबा महारा-
ज पुनीत पादारविन्दों में दासानु-
दास गोविन्द के कोटिश: प्रणाम
स्वीकृत हों। सर्वत: कुशलम्
इन दिनों कोई कुशल पत्र नहीं
आया सो दें। श्री जैन सा. आज
प्रात: यहां आगये हैं / श्री मनोहरलाल
जी नगर वालों का तबादला बूंदी
हैनिड्: स्कूल में होगया है, वेतन में
भी वृद्धि होजायगी / इनके श्री चरणों
में प्रणाम स्वीकृत हों। सुना है कि-



यहाँ काट कर खोलिये →

महान् प्रभु ॥

चरनों में दास

प्रणाम निवेदन है ...

ता० १० ... को दर्शनार्थ

आने का विचार रखता हूँ ...

तो आप ही जानें ...

की कृपा से ठीक है आप अपनी

कुशलता का पत्र ...

...

और श्री ...

...

ता. कृपा ...

...

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये

6/9/58



१० श्री. जैपालछाबड़ा C/o एकलारिंजीनि
यरिंगवर्क्स स्टेशनरोड़ भांडूप
पोस्ट भांडूप बम्बई नं. ८०
Bombay

तीसरा मोड़

दूसरा मोड़

पहला मोड़

भेजने वाले का नाम और पता :-

श्री सूरत १ ५/५८

परम पूज्य महाराज आदरणीय देवादि देव
॥ श्री जी॥

चरनों में कोटि २ प्रणाम स्वीकार हो

आज ही ॥ श्री जी॥ आप का कृपा पत्र मिला
प्रार्थना है कि इसी प्रकार सदैव कुशलता
रहने की कृपा बनाये रखें

जबसे घर से चला हूँ तब से इस समय
तक पेट में दर्द मरोड़ आर आँव जाता
है दवाई ले रहा हूँ कभी कम कभी ज्यादा
इसी प्रकार चलती रहती है ठीक हो जावे गी
यह कर्मों का भोग है इसी कारण अहमदा
बाद नहीं गया ता ९ ५/५८ से पयूसण पर्व
शुरू हो जाते हैं विचार ऐसा है कि

तबियत ठीक नहीं हो पाई तो वापिस
भरतपुर चला जाऊँगा तबियत ठीक
होने से फिर विचार करूँगा।

आगे तो भागवन आप ही जाने।

कि बम्बई कब बुलाकर दर्शन दो
बम्बई कितने समय

कृपा कर जरूर लिखने की कृ

आज ही आपके कृपा पत्र के साथ श्री
पंडितजी का भी कृपा पत्र मिला है उन्हें
भी भरतपुर पत्र लिख रहा हूँ

यहाँ से सभी मण्डली॥ श्री जी॥ के चरनों
में प्रणाम अर्ज करती है दयालु दया
आगार कृपा कर कुशलता का पत्र
इसी प्रकार लिखने की कृपा करें

करते रहें यदि योग्य सेवा
हो तो लिखें

श्री जयपालजी को हमारा
जैशंकर कहदीजियेगा

कष्ट के लिये क्षमा चाहता हुआ प्रार्थना
करता हूं कृपया उत्तर
शीघ्र ही देकर कृपा बनाये
रखेंगे /

- पापकारी
जैन

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये



सेवा में परम आदरणीय ॥ श्री जी ॥
C/o श्री जयपाल छाबरा
अल्फा इंजिनियरिंग वर्क्स
स्टेशन रोड भांडूप
पोस्ट भांडूप बम्बई ७८
Bombay No ...

पहला मोड़ | तीसरा मोड़ | दूसरा मोड़

1/9/58

भेजने वाले का नाम और पता :-
N.C. Jain
७८ मोतीचन्द लल्लूभाई बिल्डिंग
काजी मैदान के पास
... नं. ८ सूरत



6

है वहा सब को नमस्कार ॐ शंकर कह देना —

आप कब तक रहोगें —

श्री गुलाब मुनीजी — तथा श्री किस्तूर मुनीजी

से मिला सब प्रकार आपकी कृपा है आनन्द सर्व

बात होगई जो मिलने पर निश्चित रूप से बता दूंगा

व्यापार की ओर से आप तनिक भी चिन्ता नहीं

करें यह सब मेरे कर्मों के ऊपर छोड़ दो लेक

आपके आशीर्वाद से आनन्द हो जायेगा — आप इस

की तनिक चिन्ता नहीं करें श्री जी का सर्वाधिकार रखते

बालके अपने स्वास्थ्य तथा पण्डितानी जी के स्वास्थ्य की

बराबर ध्यान रखकर — उपचार आदि दवाई कुछ

खर्चे के लिये रुपयों की जरूरत हो तो भिजवा दूं

निःसंकोच लिख देना — मैं तो आप को अपने

हृदय में बसा स्थान दे रखा है — आपका ही बन्दा

था — पेन इधर आज ही [illegible] लेता हूं — आप

हृदय में [illegible] कुमार

श्री

घाटकोपर
बम्बई नं० ३९
२८-१२-६०

सेवामें

श्रीमान् पण्डित जी के चरनो में मेरा प्रणाम स्वीकार हो-

आपका कृपा पत्र अभी मैं विचार करता ही था। देहली से पत्र नहीं आया - इतने में ही प्राप्त हुवा - आप बड़े ही कृपालु चार की जानने वाले हो - श्री० जी के अस्वस्थता का खबर जानके ही पढ़कर मन को चिन्ता हुई - वैसे तो वही होगा है जो होना है - इच्छा है जो सेवा बन सके - आप भाग्यशाली हो हम को ऐसा अवसर मिला ही नहीं - उनके चरनो में अनेकों बार प्रणाम निवेदन कर मेरी ओर से निवेदन करना - मैं महा मूरख जड़ ही हूँ कोई बात मेरे परिवार - तथा मेरी ओर से ऐसी होगई हो तो क्षमा कर देवें क्योंकि वह तो बड़े ही दयालु हैं - उनके स्वास्थ्य के बारे में लिखते रहना पता चलता है - मैं ता २१ २३/६० तक भरतपुर पहुँच जाऊंगा - अगर आप की राय हो तो मैं भी देहली आपके दर्शनों का लाभ ले सकूं - श्री पण्डितानी जी को मेरा चरण छूना कहना - ... आपका ...

શ્રી ગુરુભ્યો નમઃ

સૂરતસિટી
તા. ૨૯-૮-૫૮

શ્રીમાન સેઠ સા૦

— સાદર રંવ સપ્રેમ શુભઆશીષ.

આપ તથા શ્રી. વાવા મહારાજ સાનન્દ પૂર્વક
પહુંચ ગયે હોગેં. મગર કોઈ કુશલતાપત્ર તારક
તક ભરતપુર નહીં મિલા. મૈં સૂરત આગયા હૂં
કૃપાકર શ્રી. પૂજ્ય વાવા મહારાજ તથા અપની
કુશલતા કાપત્ર લિખેન કી કૃપા કરેં ઔર
પૂજ્યનીય, વાવા મહારાજ કે ચરણોં મેં મેરા કોટિ
કોટિ પ્રણામ નિવેદન કરેદવેં.

ભવદીય,
નિરંજનલાલ જૈન
C/o મોતીભાઈ લલ્લુભાઈ
ઝવેરી.
કાંજીની મૈદાન કંન્ક
મૈન્શન રૂમ નં. ૪
સૂરત

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये



To

Shri. Jai-pal Chhaba

c/o Alfai Engineering works

Station Road.

Bhandup

(Bombay No.-40

पहला मोड़

तीसरा मोड़

भेजने वाले का नाम और पता :-

From Niranjan Lal Jain

c/o Motibhai Lallo Bhai

Javeri

Rajendra Nevas Kankoo

Mention, Room No-4,

Surat City.

ता. 16.12.58

श्रीमान् पं. [illegible] प्रणाम/— आपका आपके द्वारा भेजा पत्र

[illegible] ता. १० १२/५८ व ११ १२/५८ दोनों यहां आने पर

[illegible] मिल गये / और एक पत्र योगानन्द आश्रम

पो. [illegible] हालीशहर २४ परगना से भी आया है

उसमें लिखा है कि "ज्ञानी गुरु" हिन्दी में [illegible]

अभी तक छपा नहीं है क्योंकि आर्थिक [illegible] कठिनाइयां

की कठिनाइयां आ रही हैं / "तान्त्रिक गुरु"

की हिन्दी और छपाई के बारे में जल्दी [illegible]

दूसरे प्रकाशन [illegible] यहां नहीं है, आपको

आपको विशेष लिखा जायगा / इस प्रकार [illegible] को

स्वामी योगानन्द जी के आश्रम की [illegible] बड़ी ही

[illegible] नहीं है और [illegible] ही है कि

यह लिखते हुए हूं कि श्री गोपाल चैतन्य देव जी

महाराज कहां हैं? जैसे कि श्री [illegible] जी ने [illegible]

था कि उनके बारे में भी पूछना — श्री जी को मेरा साष्टांग

प्रणाम कहें और उपरोक्त बातें बताने की कृपा करना /

मैं आपके चले जाने के बाद १४ ता० को उनकी सेवा में

बैठा था तब उन्होंने श्री गोपाल चैतन्य देव का नाम

बताया था /—

शेष कुशल है कृपा बनाये रखना।

आपका अपना

[illegible]

[illegible]





-72

...प्रणाम

कि

1-72 को ... जी का
... कुशल में मनाया जारहा है
...को प्रसन्नता है और खेद सनवात है
कि मैं कुछ दिनों से हृदरोग से पीड़ित
डाक्टरोंने रुमैटीक हार्ट बताया है विशेष
के तौरपर हृदयके उपरके वाम कोष्ठ से ... वाले
कोष्ठ को रक्त जाने वाला जो ही छेद है वह छोटा ...
या तंग होगया है जीससे 3-4 बार आक्रमण
होचुका है डाक्टरों ने बताया ... कि अपनी
जेबमें पर्ची नामध्याम ... को विवरण रखकर
... जावें किसीभी क्षण ... आक्रमण होनेपर
योग्य डाक्टर चिकित्सा ... बैसे मैं
किंचित मात्र ... भयभीत नाहि हुं
... अपने ...

पूर्ण कर ...
हुआ हार्ट ...
कोलेस्ट्रॉल ...
कि ...
बली ... द्वारा
... जी के लोक ...
... केवल एक ...
... जिसको 12 ना वर्ष चलरहा है ...
ले जिसके जन्म समयमें विशेष व्यक्तित्व ...
... की ... आधारमें लटक रहा है
... 11 वें वर्ष से ... नाहिथा
... आज्ञानुसार किया गया आठमे ...
गुरुजीके समक्ष यज्ञोपवित संस्कार 12 में ... दिक्षा
... में वर्ष तक गायत्रीजप संध्यावन्दनादि चेलता
... थर्ड ... में हुआ अतः ... कोई
... लाही ... होनेपर ... के
... ही घर ... पुनः ...
लगाया ... केल पुनः ...
दिजानी पड़ी ... जीवी ...
... पर या ...
नाहिमिला अतः ...
है ... जाव ...
आपबैदिक ...
... मिल ...

[illegible] जातकीपी
[illegible] लावे [illegible]
[illegible] चैत्र शुक्ल
[illegible] ३-१४-[illegible]
[illegible] ३

[illegible]	[illegible]	मं	बु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रा
		००	००				१०
		१०	१५				२८
		३०	२०				
	८	२०	११	२०	[illegible]	[illegible]	२

आवनाई है
[illegible] गुरु का अन्तर २०२९ के २ [illegible] से शुरु होगा

जन्मपत्र लग्नं — चलितम् — नवांश लग्न

मैं [illegible] वाले छोटे भानजे [illegible] के दो [illegible]
दृष्टि जाती रही २९ [illegible] को पटियाला गया था श्री हंसराज [illegible]
से प्रार्थना [illegible] के आया था कि श्री [illegible] जी का [illegible]
[illegible] मेरी [illegible] कि दर्शनाभिलाषी [illegible] कृपा [illegible]
[illegible]: बाहर अकेला कम ही जाता हूँ [illegible] आवश्यकीय [illegible]
[illegible] पहुंचकर [illegible] परिचि[illegible]
[illegible] अतः [illegible] लादि पूजार्थ
[illegible] अर्पित [illegible] श्री [illegible]
[illegible] होते रहे [illegible] प्रार्थना
[illegible] २० [illegible] प्रवेशार्थ प्रयत्न
[illegible] (कुरुक्षेत्र)
[illegible] पास होगया

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

भारत
15 P
INDIA

श्री [illegible] जी
मु. पो. सुहाना, तसील [illegible]
जिला रोपड़

पहला मोड़ First fold

तीसरा मोड़ Third fold

प्रेषक का नाम और पता :— Sender's name and address :—

[illegible]

2449

इस पत्र के भीतर [illegible] रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

REF.................................... Dated At Bharatpur the 3/6/78 भरतपुर

प्रात:स्मरणीय श्री

अनन्त श्री "श्रीजी" के सौकर पुण्य पादों में
दासानुदास के साष्टांग प्रणाम ज्ञात हों;

आपके जाने के बाद अभी आपके समाचार श्री [illegible] जी के पत्र द्वारा प्राप्त हुये; पत्र पढ़कर खुशी हुयी कि आप का स्वास्थ्य वहां ठीक है, श्री रघुनन्दन लाल जी का भी कोई कुशलता का पत्र भी नहीं आया, उससे चिन्तावनी हुयी थी। लेकिन अब आप के कुशल समाचार आने से सभी प्रसन्न हैं, जयपुर से श्री [illegible] जी का पत्र आया था आपको प्रणाम लिखा है तथा [illegible] साथ में भी भेजे थे जिनके लिए हम पुन: आपको [illegible] भेज रहे हैं।

पूज्य श्री ताऊजी एवं गुरुजनों की ओर से आपको साष्टांग प्रणाम ज्ञात हो, श्री बलभद्र भाई [illegible], [illegible], श्री धर्मेश्वरजी आदि सभी का आपको जयश्रीकृष्ण ज्ञात हो, श्री हरगोविन्दजी गत रात्री को भरतपुर आये हैं आपको जयश्रीकृष्ण कहते हैं।

श्री पं. रविशंकर जी एवं उनके परिवार वालों को और तथा यहां के सभी प्रेमी जनों का जयश्रीकृष्ण ज्ञात हो।

शेष सभी आपके आशीर्वाद से सकुशल हैं।

पत्रोत्तर शीघ्र दिलवाने की कृपा करें — दासानुदास

आपकी अति कृपा होगी — [illegible] शर्मा

त्रुटियों को क्षमा करना — 3/6/78 [illegible]

श्री दुर्गादत्त जी के पत्र से मालूम हुआ है कि श्री सियारामजी
कलकत्ता गये हुए थे

आशाकुमारी
ओरंगा
3/6/78

२०-१०-५८

श्री जगज्जनन्यै नमः

आदरणीय भ्रातृवर श्री गोविन्दजी

पत्र मिला दो लिफाफे भी

जब कभी समय हुआ लिखूंगा

श्री पूज्यपादजी आपके सौभाग्य से आपके यहां है इसकी महान प्रसन्नता है इस अकिंचन को भी कृतार्थ करेंगे ऐसी भावना लिये हूँ

हां तो एक आपसे निवेदन कर रहा हूं कि श्री स्वाध्याय का सम्पादन अवश्य करने का मार्ग निकालें क्यूं कि इससे हमको श्री पूज्यपादजी के द्वारा प्रसाद रूप में जो कभी कभी आध्यात्मिक उपदेश मिलते थे उनसे वंचित हो गये हैं वह मिलते रहने चाहिये इसके सम्बन्ध में क्या स्थिति है कृपया अवगत करायें

क्या विंशती का शास्त्र छप गया है तो उसकी प्रति और रत्नालोक की १ प्रति और कोई [illegible] जो हमको अपने विषय में प्रसिद्धिप्रद हो

गीता का अनुशीलन भी करता रहता हूं
तथा श्रीमद्भागवत का भी
योगदर्शन का भी परन्तु इनसबके देखने
से कहीं कहीं इतनी उलझने सी
उठ खड़ी होती हैं (अर्थात् भ्रान्तियें
होने लगती हैं पूर्ण लक्ष्य के प्रति वेशक
आत्म विलास ही (सुगम प्रकाश डालता है
इसको भी समझने के लिये किसी प्रारम्भिक
ग्रन्थ देखने की आवश्यकता है वह कौन
सा ग्रंथ है कृपया गुरु जी से प्रार्थना
पूर्वक मेरा निवेदन करना कि कौन कौनसे
ग्रंथ देखने चाहियें मंगासकूं/ शैवदर्शन
भी एकवार श्रीगुरु जी कहते थे वह कठीन
होगा क्या हिन्दि टीका युक्त कहीं मिलेगा
अथवा और जो श्री जी की आज्ञा हो देखूं
श्री जी ने मुझे शान्ति स्वरी को लिये भी कहा था
वह मैंने मंगाली है तीलक गीता भी कुछ
स्वामी रामतीर्थ की पुस्तकें भी उन में भी
अलौकिकता देखी जो आपके पूज्य चरणों
के उपदेशों से ही मिलती जुलती है
आज कल में वैसे तो योगीयों के वातावरण से

[illegible] चला आरहा हूं फिर भी पूज्य चरणोपदेशों
तथा ग्राह्य परिस्थिति पर संदेह है [illegible]

२०-१०-५८

श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

परम पूज्य श्री गुरुजी

सेवक की कोटिशः प्रणाम

आज पत्र श्री गोविन्द जी का मिला जिसमे आपकी उपस्थिति का भि पता चला महान प्रसन्नता है कि आपने अपने आदेश सेही ऐसा लिखने को कहा होगा नही तो आप अपनी उपस्थिति के बारे में ~~सक~~ संकेत करने परभी प्रतिबन्ध लगाये रखते है मैं वृन्दावन जाते आपके दर्शनोंका लाभ पाचुका हु और प्रार्थना भी करगयाथा। कि इसबार अवश्य यहां पधारकर कुछदिन सेवा का मौका देंगे सो आशा लगाये हुं अवश्य इस अकिंचनकोभी कृतार्थ करियेगा महान हर्ष होगा

आपका अबोध सेवक
वैद्य पन्नालाल शर्मा

GRAMS: "LAKHOJI"

DR. R. C. GUPTA & Co.

DIRECT IMPORTERS & EXPORTERS
AND
COMMISSION AGENTS
BHARATPUR

Ref. No. .... Date ....

To

....

....

....

श्रीमान्

अनन्त श्री पूज्य पाद बाबा महाराज के पुनीत पाद पद्मों में दास की कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हों एक लिफ़ाफ़ा 3-४ दिन पूर्व सेवामें भेज चुका हूं जिसमें श्री जैरामजी का पत्र भी था पंहुच लिखियेगा आज श्री कस्तूरी लाल जी का पत्र आया है साथमें भेज रहा हूं श्री शिवप्रसाद जी का पत्र भी भेजरहा हूं श्री जै रामजी तथा शिव प्रसाद जी दोनों के रुपये मिल गये हैं श्री रा[illegible] श्लोक के छपने का प्रबन्ध हुआ या नहीं। अरे की छत को विचार जल्दी से जल्दी कर रहा हूं आपका कबतक पधारने का विचार है श्री बाबू जी श्री भाबी जी चि. जगदीश हरी सावित्री प्रभृति सब को जय श्री[illegible] श्री हरदेव जी ने पहले पत्र में लिखी हुई बातों का उत्तर नहीं दिया जैसी (बताई) जिन दिनों इनका पत्र आया है (जो हमें नहीं मिला) उन दिनों लहरी पोस्टमैन छुट्टी पर था किसी ईसाई ने डाक को काम किया है लहरी से पुछवाया ~~भी किन्तु~~ कोई पता नहीं चला श्री पुरोहित जी ने ५-७-१० दिन बाद देने को कहा है ता. ४ को वह गाजी पुर जा रहे हैं वहां से आकर सीमन्त है क्यु अच्छा हो कि श्री हरदेवजी एक पत्र उनको अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए लिखें आज एक पत्र जगजीवन दास गुप्त का भी [illegible] की बिक्री के लिये अलग रख दिया है और 33%. कमीशन देने को लिखते हैं/ह.प.

(۱۰۴)

پیارے سیٹھ جی -

نمستے - میں آپ کے پاس کافی دن پہلے آیا تھا ایک آدمی کی

تلاش کے لئے - اور میں نے سوامی جی سے خط بھی آپ

مانگے تھے - پھر تو آپ نے کہا تھا کہ کوئی خط نہیں ہے۔ قبول ایک

تیہ میں یہاں ہے

تھا سو میں نے پڑھ لیا ست نتی مجھے اس کمیرہ ملی تھی جو آپ

اس کمیرہ گھر میں بیٹھے تھے - اب سوامی جی مجھ کو لیرا پر بھیجنی

کی نے پھر مل جا پاکر آتا ہوں - اگر کوئی آدمی وہاں آئے

کدال جی کو دھونڈنے والا

پاس آیا ہو کی - اس آدمی سے کہہ کر دو یا کر دو



اسکو بھیج دو - اور اگر نہ آیا - اور پھر آئے گا آوے تو اس کی

اس پتہ پر بھیج دیں = لال سنگھ معرفت

گلاب سنگھ مستری -

سوئی والی کی دوم شالہ

رشی کیش -

بھگوان آشرم کے نزدیک

آپ کا

20/8/45

398/47

سیٹھ چرنداس

ہری ہر آشرم

کنکھل

सेठ चरण दास

हरि हर आश्रम

कनखल

स्वगुणता मम मंदभाग्यत्वादेव । यदि अस्त्नस्या- बाधा भवेत् तत्र श्रीचरणे अवसरेण

पवित्री करिष्यन्ति अनुकंपितम् ।

प्रभो ! यथा परमकृपया ऽतिस्नेहेन मधुर-

मधुर वाक्यैः पुन अत्र बोधितो ऽयं जन:-

तथैव साम्प्रता ऽपि स्नेह [illegible] वचोभि:-

त्रिविधतापेभ्यो रक्षणीय: ।

प्रभुलाभात को हैं बचाते सभी

फिर कैसे हैं तुम भोगोगी मां

हम छोड़ें हैं चाहे तुम्हारा नहीं

फिर कबलों नांच्या उत धोगी मां

विनीतधनक

प्रेमत्को दासा,

नन्दकिशोर वै.

उत्तीलाम्बा (नीचे) जि. कांगड़ा

ॐ ज्वालामुखी

श्रीसन्माननीय परमादरणीय परमपूज्य
श्री आचार्य चरणेषु दास मन्दिरतोर
कृता नतय स्सन्तु .... । पूर्वम्
तत्रभवतां भवतां .... भावत्क ......
चित्त .... भवत्कर कमलाङ्कितं
दत्तम् । श्रीपूज्य पं. गोविन्दशास्त्रिणां पत्राद-
न भावत्कं प्रदत्तं ज्ञायेत । न जाने
कस्मात्कारणात् — विस्मृति पथं नीतोऽयं
जनः । प्रायस्त्वीना — एव काचन त्रुटयः — सन्ति
इति मन्ये । परं — मया तु — तत्पारिहारार्थमेव
श्रीचरणावलम्बनं कृतम् । मदीयेयं प्रार्थ-
ना (श्री तुलसीदासपूर्वं) " — अति प्रपन्न
रघुपुङ्गव निर्भितं मे — कामादि दोष रहितं
कुरु मानसं च " । न जाने कथं श्रीमद्भिः
" सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते ।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम ",
इति विस्मृतम् । कोऽपि .... वर्त-
.... । प्रतीक्षे .... भावत्की



सेन्डर का नाम और पता :— Sender's name and address :—

To
Rajkumar Aggarwal Ji
539 Shri Niwas Puri
Ring Road
New Delhi. No 14



अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

आप सब गलतीयों को क्षमा करके और आप बताओं की श्रीमान राजजी महान की कौनसी चीज खराब हैं। फेर कियाँ इसका उपाय हैं। हम तो आपके ही जानते हैं। नाथ फीकर चिन्ता के मारे कुच्छ नहीं सूजता हैं। फीकर ईतनी बढ़ गई हैं। की कुच्छ कह नहीं सकती हूँ। मगर कियाँ करु नाथ आप का सहारा हैं। आपही सब दुःखों को दुर करेंगें। और नाथ अब में कियाँ करु कहाँ जाँऊ मेरी जीन्दगी नाथ अब बहोत खराब हैं। ईन बच्चों का दुःख अब नहीं देखा जाता हैं। अब नाथ हमारी पार तो आपहि लगाओगें और अब हम कहाँ जाँय अब दुःख नहीं सहा जाता हैं। नाथ आप एक दफे तो भरतपूर आने की क्रिपा करो आप एक दफे तो जरूर भरतपूर पधारें मेरी ये ईच्छा बहोत हैं। अब नाथ खानपान बन्द हो चुका हैं। बान्द भी श्रीमान का निकल चुका हैं। और कोठी पर कुन कोरठ होने वाली हैं। अब नाथ किया करें कहाँ जाय दुनियाँ में। बिना आपके कोई सहारा नहीं हैं। आपहि अब डुबी हुई नाँव को पार लगावेंगें। नाथ मैं अब दुःख की कियाँ कहुं। नाथ मेरी तो अब जिन्दगी खराब हैं। मैं कहाँ जाँऊ किया करु अब ये दुःख नहि सहा जाता हैं। आप ही ईस को पार लगावेंगें और एक दफे भरतपुर जरूर पधार ने की कोशिश करें। और जादा किया लीखु थोड़े को जादा समझना गलती को माफ करना जी।

पत्र का जवाब जरूर देना जी

नाथ जवाब जरूर ही देना जी।

आपकी बेटी
सन्ताम कुमारी

॥ भरतपुर ॥ ॥ श्रीरामजी ॥ ॥ कोठी गुल्जार बाग ॥

॥ ॐ ॥ ॥ ता: ११-८-४६- ॥

॥ सेवामै ॥

श्रीमान पूज्य बाद श्री बाबा महाराज के।

चरण कमलों मैं मेरी बहोत २ डनडोत मालुम होवें। अपरंच यहाँ पर सब राजी खुसी है। आपकी राजी खुसी श्री परमात्मा से हरदम सुभ चहाती हुँ। प्रेम पत्र आपका मीला पढ़कर कुछ शान्ती। मेरी आगे तीनों बच्चे आपकी सेवामै बहोत २ डनडोत अर्ज करते हैं। श्री १०८ बाबा रामजी महाराज का अभी तक कोई पता नहीं लगा है। बाबा रामजी महाराज की ये बात खबर थी और कल की ग्रीह भी। खबर थी। किया अब कुछ बाकी नहीं रहे हैं। आप ही बताओ और हम कहाँ जाय कीसे पुच्छे प: गोविन्द जी को पुच्छते है तो वे कुछ जबाब नहीं देते हैं। अब बाबा महाराज हम तो आपकी शरण मैं है। हमारी पार तो बाबा आप ही लगाओगे। अब हम कहाँ जायँ। हम तो भरतपुर में पलडीह जी के सिवाय और कीसी को नहीं जाने बेसी कुछ बातें नहीं हैं। तो बताओ अगर आपको नहीं पुच्छें तो हम कीसे पुच्छें) बाबा कोई कहता है कि रामजी महाराज बाबाजी होगये हैं। कोई कहता है। कि कीसी ने मरवादिये हैं। ऐसी ऐसी बात सुनाई पडती है। अब बताओ बाबा हम किया करें हमारे लीये दुनियाँ मैं कहीं भी जगह नहीं है। बाबा अब

श्री

पुलिस थाना
गढ़ीबाजना
पोस्ट कोष्ट ज़िला
भरतपुर-(राज०)
15-10-80

उपरान्त श्री विभूषित श्री बाबा महाराज के पुनीत चरण कमलों में मेरा साष्टांग प्रणाम पहुंचे। आशा है श्री चरण स्वस्थ होंगे। मैं यहाँ श्री चरणों की कृपा से कुशल हूं।

प्रभो दिनांक 3-10-80 को मैं मथुरा गया था। श्री पंडित जी महाराज, माँ जी, चि० धर्मशीला, चि० श्रीराम, आदि सभी ने श्री चरणों में प्रणाम निवेदन करने लिखने का मुझे श्री पंडित जी महाराज ने आदेश दिया है। पंडित जी के पेशाब में रुकावट चल रही है बाकी स्वास्थ्य अपेक्षाकृत ठीक है। एवं श्री चरणों की कुशलता जाननी चाही है। अतः कुशलता से अवगत कराने की अनुकम्पा करें। तथा श्री चरणों की कृपा मुझ पर निरन्तर बनती रहे व अनवरत बरसती रहे ऐसा अनुपम आशीर्वाद मुझ दीनहीन शरणागत को कृपा कर देने की कृपा करें। आदरणीय माँ जी सेवक जी व श्री चरणों के अन्य प्रेमी भक्तों को मेरा करबद्ध प्रणाम पहुंचे।

कुशल पत्र अवश्य देने की कृपा करें।

गोपाल आनन्द

भरतपुर ठौ

आपका चरण रज -
प्रेषक -
विश्वम्भर सिंह
M.E.
पुलिस थाना गढ़ीबाजना
जिला भरतपुर
(राज०)

पहला मोड़ FIRST FOLD

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD





पू० श्री "श्री जी" पं० श्री सीतारामजी
B.66 मोतीबाग साउथ
नं० 2 नई दिल्ली

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

विश्वम्भर सिंह

पिन PIN

14/1/86

नहीं - श्री बाबा महाराजजी का स्वास्थ्य
कैसा है - मेरी ओर से प्रणाम करना
श्री पण्डितजी जी को हमारा चरण
छूना कहना क्या उनका इलाज है
तथा तबियत का क्या हाल है सो
लिखना श्री भगवान से उनका
प्रार्थना करें - आप भी अपने स्वा-
स्थ्य का ध्यान रखना - श्री [illegible]
जी मालवीया का पत्र पोस्ट द्वारा
[illegible] इलाहाबाद [illegible]
मालूम
बम्बई [illegible]
के पते पर पोस्ट से भेजा है -
पहुँचा या नहीं पर मालूम और
मैं नहीं जा सका तबियत मेरी खराब
रही - कृपा करना - श्री [illegible]
[illegible] 103) [illegible]

पत्र मरतबा मिला - जो पहले से रुपया
100/ प्रत्येक पत्र पढ़ते ही उसी दिन
[illegible] भेजता हूँ अब केवल बीस रुपया
रह जाते हैं - अगर आज्ञा हो तो कोई
भी नहीं बता दिया और अन्यथा
फिर कुछ मांगने पर भेजता हूँ
जैसा उचित समझें लिखना -
वहाँ के सबसे भागवत प्रसाद जी
पन्नालाल जी - प्रकाश जी सब को
प्रणाम कहते हैं - तथा श्री जी को
मेरी ओर से प्रणाम कहना
आप का [illegible] राम कैसा है - क्या मेरा
[illegible] जी के [illegible] कुछ [illegible]
है लेकिन [illegible]
पहिले श्री - पण्डितजी जी का इलाज
[illegible] तथा अपने स्वास्थ्य

श्री

भरतपुर
२६-१२-६६

श्रीमान् पण्डित जी कि चरणों में प्रणाम स्वी
कार हो - मैं भरतपुर ता २५ $\frac{१२}{६०}$ जनता से
आ गया था - यहाँ सब प्रकार कुशलता
है - आप चिन्ता मत करना कल S. N. माथुर
से मिलूंगा - बाबा साजी को जाकर
मिल लिया सब ठीक हैं - श्री. बाबूलाल
जी को कल ही दुकान जी को ताज
लेकर मिल आया - प्रकृतवाति ठीक
है - आज कुम्हेर चले गये हैं - राजा
ना आना होजाना जाना होता था
राम रचना है - मैं कल उनके साथ
S. N. माथुर के पास जाऊंगा -
श्री. मुनीजी को बाबूलाल जी ने और मैं
फायुन तक कुछ नरम गर्म ही बताया
है [illegible] हो जायेगी लिखना

को ठीक करना - आप कुछ चाहते हो
तो भिजवादूं - लिफाफा जो का
है देना को तय्यार है -

श्री. गीरज शास्त्री जी
को प्रणाम लिखना -
तथा लिखना वह बड़ी कृपा
की दृष्टि बनाये रक्खें!
पत्र जल्दी बतलावें तो
कागज लिखित बढ़िया मिलेगा
S॥ S॥ S।
लेते आना - बता लाऊं पहले
लिखना कल ही सीट [illegible]
लिखता हो - तथा कृपा दृष्टि
रखना [illegible] पर बनाए
रखी देना -

[illegible]